Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 8 सिपाही की माँ

सिपाही की माँ लेखक परिचय मोहन राकेश (1925-1972)

जीवन-परिचय-
बीसवीं सदी के उत्तरवर्ती युग के प्रमुख कथाकार एवं नाटककार मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी, सन् 1925 को जड़वाली गली, अमृतसर, पंजाब में हुआ। इनका बचपन का नाम मदन मोहन गुगलानी था। इनकी माता का नाम बच्चन कौर एंव पिता का नाम करमचन्द गुगलानी था। इनके पिता पेशे से वकील थे लेकिन साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। राकेश जी ने लाहौर से संस्कृत में एम.ए. किया और फिर ओरिएंटल कॉलेज, जालंधर से हिन्दी में एम.ए. किया। इसके बाद इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया और 'सारिका' के कार्यालय में भी नौकरी की। सन् 1947 के आसपास इन्हें एलफिस्टन कॉलेज, मुम्बई में हिन्दी के अतिरिक्त भाषा प्राध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया। ये कुछ समय तक डी. ए.वी कॉलेज, जालंधर में प्रवक्ता भी रहे। सन् 1960 में इन्हें पुनः दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया। वहीं सन् 1962 में ये 'सारिका' के संपादक बन गए। इसके बाद इन्होंने स्वतन्त्र लेखन करना शुरू किया और इसी दौरान 3 दिसम्बर, सन् 1972 के दिन इनका निधन हो गया।

रचनाएँ-मोहन राकेश की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं

कहानी संग्रह-इंसान के खंडहर (1950), नए बादल (1957), जानवर और जानवर (1958), एक और जिन्दगी (1961), फौलाद का आकाश (1972), वारिस (1972)।

उपन्यास-अँधेरे बंद कमरे (1961), न आनेवाला कल (1970), अंतराल (1972)। नाटक-आषाढ़ का एक दिन (1958), लहरों के राजहंस (1963), आधे-अधूरे (1969)।

साहित्यिक विशेषताएँ-मोहन राकेश 'नई कहानी' आन्दोलन के प्रमुख हस्ताक्षर थे। ये बीसवीं सदी के उत्तरवर्ती युग के प्रमुख कथाकार एवं नाटककार थे। इन्होंने कई श्रेष्ठ कहानियाँ तथा उपन्यास लिखे। नाटक के क्षेत्र में तो ये विशिष्ट प्रतिभा माने जाते हैं। हिन्दी के आधुनिक रंगमंच को नई दिशा देने में इनका प्रमुख योगदान था। इसलिए ये आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच की युगांतकारी प्रतिभा के रूप में सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध हो चुके हैं। इनके नाटकों की परिकल्पना अत्यन्त ठोस, जटिल तथा नवीन है। इनसे प्रेरणा प्राप्त करके अनेक साहित्यकारों ने साहित्य सृजन किया।

भाषा-शिल्प की विशेषताएँ-मोहन राकेश का अद्‌भुत भाषा शिल्प उनके साहित्य को प्रमुख विशेषता है। इनकी भाषा में सरलता तथा सहजता के साथ-साथ भावानुकूलता, . प्रसंगानुकूलता, प्रवाहमयता तथा चित्रात्मकता जैसे गुण भी विद्यमान है।

सिपाही की माँ पाठ के सारांश।

'सिपाही की माँ' शीर्षक एकांकी मोहन राकेश द्वारा लिखित "अंडे के छिलके तथा अन्य एकांकी" से ली गई है।

चिट्ठी का इंतजार-गाँव का एक साधारण घर है जिसमें बिशनी नाम की महिला अपनी चौदह वर्ष की लड़की मुन्नी के साथ रहती है। उनके घर का इकलौता बेटा लड़ाई के लिए बर्मा गया हुआ है और वह दिन-रात उसकी चिट्ठी का इंतजार करती रहती है। गाँव में डाक की गाड़ी आती है तो मुन्नी अपनी चिट्ठी लेने जाती है पर चिट्ठी नहीं आती है जिससे वो कुछ उदास हो जाती है। उसकी माँ भी चिट्ठी न आने से बहुत दुखी है। लेकिन वह माँ को बार-बार यही समझाती है कि जल्दी ही चिट्ठी आएगी। फिर वे दोनों बर्मा की दूरी को लेकर बातचीत करती है। इसी बीच मुन्नी यह कह देती है कि कहीं चिट्ठी लाने वाला जहाज डूब गया हो जिस कारण उसकी माँ उसे डाँटती है।

मुन्नी की शादी की चर्चा-तभी वहाँ पड़ोस में रहने वाली कुंती आ जाती है। पहले वह वर्मा की लड़ाई के विषय में बातचीत करती है और फिर मुन्नी की शादी के बारे में पूछती है। साथ ही वह मुन्नी की शादी जल्द-से-जल्द करने को कहती है। फिर वह कहती है कि तुम्हारा लड़का जो युद्ध में गया है वह पता नहीं कब तक आएगा, क्योंकि लड़ाई का कोई पता नहीं है कि वह कब तक चलती रहे।

बर्मा से दो लड़कियों का आगमन-उसी समय वहाँ दीनू कुम्हार आता है और बताता है कि दो जवान लड़कियाँ अजीब से कपड़े पहने घर-घर जाकर आटा-दाल माँग रही है। यह बताकर दीनू वहाँ से चला जाता है। इतने में वे लड़कियाँ वहाँ आ जाती है और दाल-चावल माँगती है। जब विशनी और कुंती उनके बारे में पूछती है तो वे बताती है कि मैं बर्मा से आई हुँ। वहाँ भीषण लड़ाई चल रही है जिस कारण हमारा घर-बार छिन गया है, मैं बड़ी ही मुश्किल से जंगल के रास्ते अपनी जान बचाकर आई हुँ।

जब मुन्नी उनसे.फौजियों के बारे में पूछती है तो वे बताती है कि जो फौज छोड़कर भागता हैं, उसे गोली मार दी जाती है। फिर वे बर्मा की नाटकीय स्थिति का वर्णन करती है जिसे सुनकर बिशनी काँप उठती है। उसे अपने बेटे की चिन्ता सताने लगती है तथा कुंती और मुन्नी उसे ढाँढ़स बंधाती है। मुन्नी कहती है कि मेरा दिल कहता है कि भैया आप ही आएँगे। जिसे सुनकर बिशनी कुछ हिम्मत जुटाकर बोलती है तेरा दिल ठीक कहता है बेटी ! चिट्ठी न आई तो वह आप ही आएगा।

माँ-बेटी की बातचीत-रात के समय माँ-बेटी आपस में बातचीत करती है। मुन्नी अपर्न माँ से कहती है कि मेरी कुछ सहेलियों के कड़े बहुत ही सुन्दर हैं जिन्हें वह सारे गाँव में दिखाती हैं। तब बिशनी उसे प्यार भरे स्वर में कहती है कि तेरा भाई तेरे लिए उनसे भी अच्छे कड़े लाएगा।

स्वप्न की स्थिति : इसके बाद दोनों सो जाती हैं। स्वप्न में बिशनी को मानक (उसका बेटा) दिखाई देता है। वह उससे बातचीत करती है। वह बुरी तरह घायल है और बताता है कि दुश्मन उसके पीछे लगा है। बिशनी उसे लेटने को कहती है पर वह पानी माँगता है। तभी वहाँ एक सिपाही आता है और वह उसे मरा हुआ बताता है। यह सुनकर बिशनी सहम जाती है लेकिन तभी मानक कहता है कि मैं मरा नहीं हूँ। वह सिपाही मानक को मारने की बात कहता है। लेकिन बिशनी कहती है कि मैं इसकी माँ हूँ और इसे मारने नहीं दूंगी। सिपाही मानक को वहशी तथा खूनी बताता है।

लेकिन बिशनी उसकी बात को नकार देती है। वह कहती है कि यह बुरी तरह घायल है और इसकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं है। इसलिए तू इसे मारने का विचार त्याग दे। जवाब में सिपाही कहता है कि अगर मैं इसे नहीं मारूँगा तो यह मुझे मार देगा। बिशनी उसे विश्वास दिलाती है कि यह तुझे नहीं मारेगा। तभी मानक उठ खड़ा होता है और उस सिपाही को मारने की बात कहता है। बिशनी उसे समझाती है लेकिन वह नहीं मानता है और उसकी बोटी-बोटी करने की बात कहता है।

https://www.evidyarthi.in/

स्वज भंग-यह सुनकर बिशनी चिल्लाकर उठ बैठती है। वह जोर-जोर से मानक ! मोनक ! कहती है। उसकी आवाज सुनकर मुन्नी वहाँ आती है। माँ की स्थिति देखकर वह कहती है कि तुम रोज भैया के सपने देखती हो, जबकि मैंने तुमसे कहा था कि भैया जल्दी आ जाएँगे। फिर वह अपनी माँ के गले लग जाती है। बिशनी उसका माथा चूमकर उसे सोने को कहती है और मन-ही-मन कुछ गुनगुनाने लगती है।